International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी : सेनापति या विध्वंसक ?

श्रुति अग्रवाल हिंगोरानी

देवी अहिल्या विश्विद्यालय. इंदौर

सारांश-

बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी एक सामान्य मुग़ल सेनापति था जिसे बाबर ने अवध का गवर्नर नियुक्त किया था। बाबरनामा में उसका केवल 'बाक़ी ताशकंदी' नाम से उल्लेख है, 'मीर' उपाधि बाद में फ्रांसिस बुकानन द्वारा जोड़ी गई। 1813-14 में ब्रिटिश सर्वेक्षण में बाबरी मस्जिद से मिले फारसी शिलालेख में उसे मस्जिद निर्माता बताया गया। ऐनीट बेवरिज़ ने इस शिलालेख का अनुवाद कर इसे बाबर की आज्ञा से मीर बाक़ी द्वारा निर्मित बताया। हालांकि राम पुनियानी इस दावे को ऐतिहासिक साक्ष्य विहीन मानते हैं, जबकि बी.बी. लाल इसे मंदिर विध्वंस के प्रमाण के रूप में स्वीकारते हैं।

Key words: मीर बाक़ी, शिलालेख, मुगल, सुल्तान, सेनापति।

प्रस्तावना

इतिहास किसी भी शख्सियत को तीन तरह से याद रखता है, ख्यातमान, आम इंसान या फिर गुमनाम। बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी उन चुनिंदा शख्सियतों में से एक है जिन्हें इतिहास में इन तीनों तरीकों से याद किया गया है।

इतिहासकारों के अनुसार, बाबर ने 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी को हराकर भारत में मुगल शासन की नींव रखी। इसके बाद बाबर ने अवध क्षेत्र (वर्तमान उत्तर प्रदेश) पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए अपने सैन्य अधिकारियों को तैनात किया। बाक़ी ताशकंदी भी इनमें से एक था। कहा जाता है कि बाबर ने अवध क्षेत्र की ज़िम्मेदारी बाक़ी ताशकंदी को सौंपी थी, जिसके तहत उसने अयोध्या और उसके आसपास के इलाकों पर मुगल नियंत्रण मज़बूत किया।[1]

बाबर की आत्मकथा बाबरनामा में बाबर ने अनेक सैन्य अभियानों, अफसरों और प्रशासकीय निर्णयों का विस्तार से उल्लेख किया है। वहीं कहीं सैन्य अधिकारियों की भीड़ में एक आम सा नाम पढ़ने में आता हैः बाक़ी ताशकंदी। यह आम सा नाम खास हो जाता है, जब ब्रिटिश ओरिएंटलिस्ट ऐनीट बेवरिज, बाबरी मस्जिद में मौजूद एक पाषाण शिलालेख का फारसी से अंग्रेज़ी में अनुवाद करती हैं और इतिहास की किताबों में पहली

बार घोषित रूप से यह लिखा जाता है कि बाबरी मस्जिद का निर्माण बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी ने करवाया था।[2]

ऐनीट बेवरिज का जन्म 13 दिसंबर 1842 को इंग्लैंड में हुआ था। ऐनीट ने मुगल इतिहास और महिलाओं की जीवन-स्थिति पर गहन शोध कार्य किए थे। वर्तमान में ऐनीट बेवरिज को मीर बाक़ी के कारण याद किया जाता है। यहां ग़ौरतलब है कि बाबरनामा या अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों में हमें मीर बाक़ी का नाम नहीं मिलता, सभी जगह बाक़ी ताशकंदी के नाम से इतिहास दर्ज किया गया है। माना जाता है कि अंग्रेज़ सर्वेयर फ्रांसिस बुकानन ने 1813-1814 ई. में बाक़ी ताशकंदी के नाम के आगे "मीर" लगाया, जिसका अर्थ फारसी भाषा में राजकुमार होता है।[3] अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र के राजाओं और राजकुमारों के लिए इस ओहदे का उपयोग किया जाता था।

बाबरनामा में बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी का ज़िक्र :-

बाक़ी ताशकंदी बाबर का एक प्रमुख कमांडर था और मूल रूप से ताशकंद (मौजूदा समय में उज्बेकिस्तान का एक शहर) का निवासी था। माना जाता है कि बाबर ने उसे अवध प्रदेश का शासक, यानी गवर्नर बनाया था। बाबरनामा में मीर बाक़ी को बाक़ी ताशकंदी के नाम से ही बुलाया गया है। इसके अलावा उसे बाक़ी शाघावाल, बाक़ी बेग और बाक़ी मिंगबाशी नामों से भी जाना गया। लेकिन बाबरनामा में उसे "मीर" नाम से नहीं पुकारा गया है।[4]

बाबरनामा में बाक़ी ताशकंदी का जो उल्लेख मिलता है उसके अनुसार बाक़ी को लाहौर के पास दीपालपुर क्षेत्र में विद्रोह को संभालने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। यह कार्य सफलतापूर्वक करने के बाद बाक़ी को चिन-तैमूर सुल्तान के नेतृत्व में 6-7 हज़ार सैनिकों का कमांडर बनाया गया था। 1528 में इस सेना को एक अभियान के लिए चंदेरी भेजा गया था। यहां से दुश्मनों के भाग जाने के बाद चिन-तैमूर सुल्तान को उनके पीछे भेजा गया और बाक़ी ताशकंदी को वहीं रुकने का आदेश दिया गया। इसके बाद संभवतः लखनऊ किले की ज़िम्मेदारी बाक़ी ताशकंदी को दे दी गई थी। कुछ समय के लिए दुश्मनों ने लखनऊ का किला बाक़ी ताशकंदी से छीन लिया था, जिसके कारण बाबर ने 13 जून 1529 को बाक़ी ताशकंदी को बुलावा भेजा और 20 जून 1529 को बाक़ी ताशकंदी को सेना से निकाल दिया। बाक़ी ताशकंदी के बारे में इतना ही विवरण बाबरनामा में मिलता है। बाक़ी के साथ ही अवध में उसकी सेना को भी बाबर ने हटा दिया, जिसका वह नेतृत्व करता था। इसके बाद बाबरनामा में उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता।

फिर अचानक 1813 में बाबरी मस्जिद से मीर बाक़ी का नाम जुड़ जाता है। यह नाम जोड़ा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सर्वेयर फ्रांसिस बुकानन ने। यूं इस उल्लेख को पढ़कर महसूस होता है कि बाक़ी ताशकंदी एक आम सेनापति था जो जल्द ही मुगल सल्तनत में गुमनाम नागरिक बनकर रह गया। माना जाता है कि बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी की मजार अयोध्या के पास स्थित सहनवा गांव में मौजूद है।

Source - https://images.app.goo.gl/Wm4gkUth3bRvLHHc9

बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी और बाबरी मस्जिद:-

बाबरी मस्जिद का निर्माण किसने करवाया, इस पर इतिहासकारों में मतभेद हैं। जहां ब्रिटिश इतिहासकारों का मानना है कि बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी ने मस्जिद का निर्माण करवाया| यह जानकारी उन्हें बाबरी मस्जिद में लगे एक पुरातन फारसी भाषा के शिलालेख से मिलती है। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से 1813-1814 में एक सर्वे करवाया गया था। जहां बाबरी मस्जिद पर मौजूद फारसी शिलालेख की प्रतिलिपि को अंग्रेज़ी में अनूदित करवाया गया था। इस रिपोर्ट को प्रकाशित नहीं किया गया था, लेकिन इसका मूल लेखा-जोखा वर्तमान में ब्रिटिश लाइब्रेरी के 'एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज़' संग्रह में मौजूद है।

वहीं ऐनीट बेवरिज़, जिन्होंने सबसे पहले यह शिलालेख खोजा था, उन्होंने बाबरनामा का अंग्रेज़ी में अनुवाद भी किया था। उन्होंने बाबरनामा की मूल प्रति का अनुवाद करते हुए एक नया अध्याय जोड़ाः Appendix U। इसमें उन्होंने बाबरी मस्जिद में मिले इस शिलालेख और बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी का उल्लेख किया है।

शिलालेख का पाठ:-

"Ba farmuda i Shah Babur ki adilash
Banaist ta kakh i gardun mulaqi,
Bana kard in muhbit i qudsiyan
Amir i sa'adat nishan Mir Baqi,
Bavad khair baqi! chu sal i banaish
Iyan shud ki guftam, Bavad khair baqi!"

इसका अर्थ है :-

बाबर सम्राट की आज्ञा से, जिसका न्याय महल की तरह आकाश तक पहुंचता है, यह पवित्र मस्जिद मीर बाक़ी ने बनवाई है। यह नेक कार्य सदा कायम रहे।[5]

इसी शिलालेख में निर्माण का वक्त (1528 ई.) दर्ज है। वर्तमान में यह शिलालेख कहीं मौजूद नहीं है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के समय यह शिलालेख नष्ट हो गया। भारतीय ऐतिहासिक लेखक राम पुनियानी अपनी किताब **Communal Politics: Facts vs. Myths** में मीर बाक़ी के विषय में लिखते हैं कि मीर बाक़ी के बारे में जानकारी केवल एक शिलालेख से मिलती है, जबकि बाबर के अपने संस्मरण बाबरनामा और अन्य समकालीन स्त्रोतों जैसे तज़्किरा-ए-बाबरी में इसके कोई प्रमाण नहीं मिलते। साथ ही बाबर की अयोध्या यात्रा का कोई स्पष्ट विवरण नहीं मिलता। पुनियानी इन बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं कि मीर बाक़ी द्वारा बाबरी मस्जिद का निर्माण, इस संबंध में अधिकांश ऐतिहासिक साक्ष्य अनुपस्थित हैं। बाबरनामा या अन्य समकालीन ग्रंथों में ना ही मस्जिद निर्माण का कोई वर्णन मिलता है, ना ही किसी मंदिर के विनाश का।

वहीं पुरातत्त्ववेत्ता बी.बी. लाल अपनी किताब **Ram, His Historicity, Mandir and Setu (Evidence of Literature, Archaeology and Other Sciences)** में लिखते हैं कि बाबर के सेनापति मीर बाक़ी, जिसे बाक़ी ताशकंदी के नाम से जाना जाता था, ने अयोध्या में एक हिंदू धार्मिक स्थल को ध्वस्त कर 1528-29 ईस्वी में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था। वे इस तिथि और तथ्य का समर्थन उसी फारसी शिलालेख के आधार पर करते हैं जिसे ब्रिटिश सर्वेयर्स ने खोजा था और जो बाबरी मस्जिद की दीवार पर खुदा हुआ था।
इस प्रकार, बाक़ी ताशकंदी उर्फ़ मीर बाक़ी, मुगलकालीन अभिलेखों में एक आम सेनापति के रूप में दर्ज है, जो कुछ समय बाद गुमनाम हो गया। किंतु ब्रिटिश सर्वेयर्स द्वारा खोजे गए एक शिलालेख ने उसे राम जन्मभूमि के विवादित इतिहास में स्थायी रूप से दर्ज कर दिया।

संदर्भ ग्रंथ -

1. Lal, B. B. .Ram, His Historicity, Mandir and Setu (Evidence of Literature, Archaeology and Other Sciences , (2008), Aaryan books International, Page – 10
2. Puniyani. Ram. Communal Politics: Facts vs. Myths . (2003), Sege publication pvt. , Page - 33
3. Jain. Dr. Minakshi. Rama and Ayodhya , (2013), Aaryan books International, Page - 12
4. Kishor, kunal. Ayodhya Revisited, (2016) , Ocean books Pvt. , Page - 63-64
5. मुहम्मद के.के , मैं हूं भारतीय , प्रभात प्रकाशन, 2018. , Page - 08